सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
28 जून 2015 (सै0.10, फरीदाबाद)

मंगलदेव जी ये शब्द बहुत प्रेम से गाते थे उनके मुख से ये शब्द बहुत प्यारा लगता था आज हम इसी शब्द को फिर से दोहराते हैं।

गुरू के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नही।
जग की वस्तु कोई भी, मन को मेरे भाती नही।।
आओ प्यारे देवो दर्शन, हूँ विकल मैं रात दिन।
ताकती हूँ राह तेरी, छवि नजर आती नही।।
मैं तो तेरी शरण आई, तुमको मेरी लाज है।
छोडकर तेरी शरण मै, अब कहीं जाती नही।।
तेरा ही विश्वास मुझको एक तेरी आस है।
तू है साथी एक मेरा और कोई साथी नही।।
मेटकर त्रयताप चित को मेरे करदे आप शान्त।
राधा स्वामी भक्ति दीजे, शक्ति घवराती नही।।

गुरू से जब प्रेम हो जाता है तो ये संसार सारा फीका लगता है, यही कहते हैं इस शब्द में '' गुरू के दर्शन के बिना अब नींद तक आती नही'' जब गुरू से प्रेम हो जाता है तब नींद गायब हो जाती है, फिर नींद नही आती, फिर संसार की वस्तु मन को भाती नही, संसार फीका लगता है। जब एक बार गुरू से प्रेम हो जाएगा फिर देखो मजा! कभी आपने गुरू के लिए दो आँशु बहाए हैं? संसार के लिए तो हजारों आँशु बहाते रहते हो, कभी गुरू के लिए दो आँशु बहाए। सतगुरू के लिए जो कोई आँशु बहाता है सतगुरू उसको एक–एक बूँद का हिसाब देता है। संसार के लिए आप कितने भी आँशु बहाओ सब गटर में। लेकिन सतगुरू के लिए कोई आँशु बहा नही सकता, अपने बेटे के लिए, अपने पति के लिए तो हजारो आँशु बहा दोगे लेकिन सतगुरू के लिए आप एक आँशु नही बहाते। क्यों नही बहाते हम सतगुरू के लिए आँशु, क्योंकि हमको सत्गुरू से प्रेम नही है। अगर हमको सत्गुरू से प्रेम हो जाएगा तो हमारी आँखों से आँशु टपकने लगेंगे अपने आप। हम सतगुरू को कैसे मापते हैं? हमारे पास सत्गुरू को मापने का एक ही स्केल है कि इसमें कितनी चमत्कारी ताकत है, ये हमारे लिए कितना चमत्कार कर सकता है, ये हमारी दुकान चला सकता है कि नही ये हमारी बेटी की शादी कर सकता है कि नही, यही एक तरीका है हमारे पास जिससे हम सत्गरू को मापते हैं। इसमे दोष आपका नही है, इस संसार की शुरू से बनावट ही ऐसी है। लेकिन सत्गुरू को मापने का तरीका ये नही है, सत्गुरू को मापने का तरीका एक ही है कि सत्गुरू हमको कितना ज्ञान दे सकता है, क्या ये हमको तार सकेगा या नही? इस तराजू से तोलो सत्गुरू को फिर देखो मजा! लेकिन हम उस तराजू की तरफ ध्यान नही देते। सत्गुरू कहता है आओ मेरे पास मैं आपको ज्ञान देता हूँ लेकिन आप कहते हो गुरू जी आप अपना ज्ञान अपने पास रखो पहले मेरी दुकान चलाओ फिर उसके बाद आपका ज्ञान सुनुंगा। ये है आपके मापने का तरीका, इन मापने के तरीकों को आपको बदलना पडेगा, सत्गुरू के पास जाओ सिर्फ ज्ञान के लिए।

कबीर सहाब कहते हैं–

चल सत्गुरू की हाट, ज्ञान बुद्धि लाईये।

चलो सत्गुरू की दुकान पर आटा चावल लेने नही, ज्ञान बुद्धि लेने के लिए, इसी स्केल से हमको सत्गुरू को मापना है, ज्ञान बुद्धि के स्केल से। सत्गुरू के पास जाओ किस भाव से? कि सत्गुरू हमको तारेंगे।

''गुरू तारेंगे हम जानी'' यही भाव लेकर सत्गुरू के दरबार में जाओ।

आपने भागवत पढी होगी? उसमें एक जगह लिखा है जब कृष्ण ने कंश को मारा तो कंश की मुक्ति हो गई। कंश की मुक्ति क्यों हो गई? मुक्ति इसलिए हो गई जब कंश को पता चला कि कृष्ण मुझे मारेगा जबसे 24 घण्टे कृष्ण उसके ध्यान में रहता था और जब कृष्ण ने उसको मारा उसकी मुक्ति हो गई। मैं भी चिल्ला–2 कर कह रहा हूँ, हर सत्संग में यही कहता हूँ कि 2घण्टे 2½घण्टे ध्यान में बैठकर कुछ नही मिलेगा, मुझसे गुलामी लिखवा लो जो ये कहता है कि मुझे 2½ घण्टे ध्यान लगता है, कोई नही लगा सकता। पहले सतयुग में हजारों साल ध्यान लगता था। राजा दशरथ ने दस हजार साल तपस्या की है। लेकिन ये आज कलियुग है, समय के साथ सब बदल जाता है गुरू भी बदल जाता है और गुरू की शिक्षा भी बदल जाती है। सन्त सत्गुरू वक्त उसको बोलते हैं जो आज के वक्त की शिक्षा दे दे और आज के वक्त की शिक्षा क्या है? 2घण्टे ध्यान में बैठना (Waste of Time) समय की बरबादी है, अपने आप को धोखा देना और लोगों को धोखा देना है, अरे ये तो 2घण्टे ध्यान में बैठता है। कबीर साहब जब गए ना अपने गुरू रामानन्द के पास तो उनको चौकीदार ने रोका, कबीर साहब ने कहा मुझे गुरू जी से मिलना है तो चौकीदार ने कहा आप उनसे नही मिल सकते हो, वो ध्यान कर रहें है। कबीर साहब कहते हैं वो ध्यान कर रहें है? वो तो जूते खरीद रहें हैं, उपर रामानन्द सुन रहे थे, उन्होने कहा बुलाओ इसे और कहा मैं सच में ही जूते खरीद रहा था, कल मैं जूते खरीद कर लाया था वो पैरों में बराबर नही आ रहे थे, मैं सोच रहा था कि बाजार जाऊँगा और जूते बदलकर लाऊँगा। ये है रामानन्द जी का हाल तो फिर हम किस खेत की मूली हैं। तो फिर आज के वक्त का भजन–कीतन क्या है? आज के वक्त का भजन कीतन है 24 घण्टे उठते बैठते, चलते फिरते, काम करते, खाना खाते हर समय गुरू का ध्यान रखो, यही है आज के जमाने का भजन–कीतन। यही कबीर साहब कहते हैं–

आँख ना मूँदू कान ना रूँदू, काया कष्ट ना धारूँ।
खुले नयन मैं हँस–हँस तेरा, सुन्दर रूप निहारूँ।।

कबीर साहब खुले नयन से ध्यान करते थे, उनको सब मालिक का रूप नजर आता था। सन्त सत्गुरू वक्त की शिक्षा क्या है? आज हम जो कर सकते हैं, आज हमसे जो हो सकता है, हम वही करें। आज के जवानो में किसके पास टाईम है, कौन 2½ घण्टे ध्यान कर सकता है किसके पास इतना टाईम है, खाना खाने के लिए टाईम नही उनके पास, शनिवार को सारा फ्रीज भरकर रखते हैं (बना हुआ खाना) ऑफिस के टाईम जल्दी से फ्रीज में से खाना निकाला, माइक्रो ओवन में खाना गरम किया, खाया और निकले। कहाँ करेगा वो 2½ घण्टे ध्यान, वहाँ पति और पत्नि शनिवार को मिलते हैं। क्यों? आदमी जाता है रात की शिफ्त में और बीबी जाती है दिन की शिफ्ट में, वो दोनो शनिवार को मिलते हैं और दिन क्या करतें हैं वो? स्टोर और मॉल में जाते हैं और वहाँ से बनी हुई चपाती खरीदते हैं, वेज ओर नॉनवेज खरीदते हैं और उनको फ्रीज में रख देते हैं, उनके पास टाईम नही है खाना बनाने का, सुबह खडे हुए, नहाए, कपडे पहने, फ्रीज से खाना निकाला, माइक्रो–ओवन में गर्म किया, खाया और निकले ऑफिस के लिए। ये है आज का जमाना, इसको बोलते हैं कलियुग, अब आप उस आदमी को कहोगे कि ध्यान भजन कर, वो कैसे ध्यान भजन करेगा। उसके लिए कबीर साहब ने कहा है तुम कोई भी काम करो ध्यान अपने सत्गुरू का रखो, कैसे? आप समझते हैं कि हो नही सकता? हो सकता है, आज के जमाने में हो सकता है, कैसे? जब चार–पाँच औरतें निकलती हैं गांव से, उनके ऊपर एक बडा मटका उसके ऊपर एक छोटा मटका होता है और जब वो जब वो पानी भरकर लाती हैं, रास्ते में चलती रहती हैं, दुनिया भर की बातें करती रहती हैं लेकिन ध्यान मटके पर होता है कहीं ये गिर ना जाए। जब चलते–2 बात करते–2 उनको मटके का ध्यान रहता है तो हमें क्यों नही रह सकता, चलते–2 बात करते–2 उस मालिक का ध्यान, रह सकता है अगर हम चाहें तो, लेकिन हम काल के चक्र में फँसे हैं।

कल शाम की घटना बताता हूँ, मैं पार्क में बैठा था, एक आदमी आया और मेरे पास बैठा गया और अपनी प्रोपर्टी गिनाने लगा, मेरे पास इतने प्लॉट हैं, इतने मकान हैं, इतनी कारें हैं, पलवल में 2000 वीघा जमीन है। मैंने उससे पूछा आप कहाँ रहते हैं, उसने बताया में यहाँ बी.पी.टी.पी. में किराये पर रहता हूँ, मैंने कहा आपके पास इतने मकान हैं फिर आप यहाँ किराये पर क्यों रहते हैं? उसने कहा मेरे बेटे की तबीयत खराब हो गई उसका लीवर डैमेज हो गया, डॉक्टर ने जगह बदलने को कहा है उसकी 1 लाख रू0 महीने की दवाई आती है। मैंने उससे पूछा आपके बेटे का लीवर डैमेज कैसे हो गया, वो चुप हो गया, मैंने कहा वो शराब पीता था, उसने कहा हाँ वो सब कुछ करता था। मैंने कहा आपके पास इतने पैसे हैं, इतनी गाडियाँ हैं, क्या आपके पास मन की शान्ती है? उसने कहा नही है, मन में शान्ती नही है। अब बताओ इतना पैसा होते हुए भी उसके मन में शान्ती नही है। अगर उसके पास मन की शान्ती होती तो उसके पास जो करोडो की जायदाद है उसको लात मारता, लेकिन उसने मन की शान्ती का अभी स्वाद चखा नही हैं।

भगवान क्या है? आप कहते हो, हे–भगवान मुझको दर्शन दे दो, वो कौन सा भगवान है? क्या दर्शन देगा आपको? कोई रूप है उसका, कोई रूप नही है उसका,

नही रूप कोई, हैं सब रूप तेरे।

उसका कोई रूप नही है, कोई दर्शन नही देगा वो, हाँ उसका दर्शन है मन की शान्ती! अगर तुम्हारे मन में शान्ती आती है तो तुमको भगवान के दर्शन हाक गए। क्यों? क्यों भगवान के दर्शन हो गए? मन की शान्ती कब कब आती है? मन की शान्ती तब आती है जब हमारी सब इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं, भगवान से मिलने की भी इच्छा खत्म हो जाती है। जब हमारी सब इच्छाएँ खत्म हो जाती हैं तब हमारे मन मे शान्ती आती है, तब हमको लगता है अरे मैं तो कुछ और हूँ, मैं वो नही हूँ, मैं प्रेमसुख नही हूँ मैं कुछ और ही हूँ और वो कुछ और कौन है? वो है भगवान वो है मालिक, वही है मालिक का रूप, तुम्हारे मन में जब शान्ती आ गई तो तुम भगवान बन जाते हो, तुम स्वयं भगवान बन जाते हो, तुमको भगवान को ढूँढने की जरूरत नही है। अगर भगवान भी सामने आएगा और कहेगा मैं भगवान हूँ तो तुम कहोगे–तू भगवान नही है, भगवान तो मेरे अन्दर हैं क्योंकि मेरे मन के अंदर शान्ती है।

मजनू को प्रेम हो गया था लैला से, लैला की शादी कहीं और हो गई थी और मजनू भटकते–भटकते लैला के गाँव जा पहुँचा और वो वहाँ एक पेड के नीचे पडा रहा, कोई पहचान गया उसको और वो दौडते–दौडते गया लैला के पास बोलने को और कहा–लैला देख तेरा मजनू आया है, वो वहाँ पेड के नीचे लेटा हुआ है, लैला दौडी–दौडी गई उसके पास और कहा–मजनू –मजनू देख मैं तेरी लैला हूँ। मजनू ने आँखे खोली और उसको देखकर बोला तू मेरी लैला नही है, मेरी लैला नही है, मेरी लैला यहाँ (मेरे ह्रदय में) है। क्यों? क्योंकि लैला– लैला करते–करते उसको मालिक का रूप आया था लैला के रूप में, जब उसको मालिक का रूप आया लैला के रूप में तो फिर संसार की लैला क्या थी? संसार की लैला फीकी पड गई, इसलिए उसने कहा तू मेरी लैला नही है, मेरी लैला मेरे अंदर है। इसी तरह जब हमारे अंदर शान्ती आती है, तो भगवान भी आ जाए तो आप उसको कहोगे तू भगवान नही है, मेरा भगवान इधर (मेरे ह्रदय में) हैं, और मन की शान्ती क्या है? मन की शान्ती उस मालिक का रूप है। जिसको मन की शान्ती मिल गई उसको समझो मालिक मिल गया। मन की शान्ती कैसे मिलती है? जब हमारी सब इच्छाएँ खत्म हो जाएँ, हमारे मन में शान्ती आ गई और वही मालिक का रूप है।

!!राधा–स्वामी!!